P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VII March-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों में आत्मविश्वास का अध्ययन

दीपा स्वामी
शोधार्थी,
कला, शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,
ज.ना.व्यास. वि.वि.,
जोधपुर

प्रेम चन्द गुर्जर
शोधार्थी,
कला, शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,
ज.ना.व्यास. वि.वि.,
जोधपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन कार्यरत व अकार्यरत माताओं की सन्तानों के आत्मवि”वास का अध्ययन था। न्यादर्श के रूप में 600 छात्र–छात्राओ का चयन किया गया जो कि कक्षा दशम् के विद्यार्थी थे। शोध निष्कर्षों से यह पता चलता है कि कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों के आत्मवि”वास में कोई अन्तर नहीं पाया गया। दोना वर्गों की सन्तानों का आत्मवि”वास स्तर एक समान हैं।

मुख्य शब्द : आत्मवि”वास, कार्यरत व अकार्यरत महिला एवं संतान।

परिचय

बालक की प्रथम गुरू उसकी माता होती है। यह अकाट्य सत्य है कि चाहे कोई भी दे”ा, काल, स्थान, संस्कृति व सभ्यता रही है, माँ ही बच्चे के निर्माण की प्रारम्भिक प्रयोग”ााला है, जहाँ बच्चे पर उसके निर्माण की प्रक्रिया निर्धारित होती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से f”k”kq को माँ से जो प्रेरणा मिलती है वही प्रेरणा बच्चे की सोचने की शक्ति, तर्क करने की शक्ति व समस्या को हल करने की शक्ति पर गहरा प्रभाव डालती है।

बालक के उचित शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, चारित्रिक तथा मानवीय मूल्यों के विकास का उत्तरादायित्व माता–पिता पर है। पिता की अपेक्षा माता के व्यवहार का प्रभाव बालक पर अधिक पड़ता है क्योंकि बालक माँ के समीप पिता की अपेक्षा अधिक रहता हे। माता बालक–बालिकाओं के लिए भावात्मक आश्रय है। ऐसी स्थिति में माँ को अपने बालक पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

वर्तमान समय में कई माताओं को घर की जिम्मेदारियों के साथ परिवार को आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए घर की चारदिवारी के बाहर जाकर नौकरी करनी पड़ती है। ऐसी माता या महिला को कार्यरत महिला कहा जाता है।

कार्यरत महिला को आमदनी बढ़ाने के लिए रोजगार करने के साथ–साथ माँ और गृहिणी के कर्त्तव्यों का निर्वाह भी करना होता हैं। इस प्रकार कामकाजी नारियों को दोहरी भूमिका निभानी होती हैं, इस भागदौड़ का सबसे ज्यादा प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ता है। उन्हें माँ का साथ ना मिल पाने से उनके व्यक्तित्व का विकास प्रभावित होता है। कार्यरत माता के घर से बाहर रहने के कारण उनके बच्चों में उन गुणों का विकास नहीं हो पाता जिसकी उन्हें परम आवश्यकता होती है।

अकार्यरत महिलाएं अपने बच्चों पर पूरा ध्यान दे पाती हैं। वे हर समय उनकी समस्याओं को दूर करने में तत्पर रहती है। अपनी समस्या का तुरन्त हल पाने से उनके बच्चों में विश्वास की भावना का स्तर बढ़ जाता है। जिससे वे बड़े होने पर इसका सुखद अनुभव प्राप्त करते है। वहीं कार्यरत महिला घर व बाहर के कार्यों में इतनी उलझ जाती है कि वे अपने बच्चों की आव”यकताओं, समस्याओं पर ध्यान नहीं दे पाती हैं फलस्वरूप उनके बच्चे स्वयं में आत्मवि”वास की कमी को महसूस करते हैं।

उपर्युक्त आधार पर यह आव”यकता अनुभव की गई कि ‘‘कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों के आत्मवि”वास का अध्ययन किया जाए।’’ इसी उद्दे”य को दृष्टि में रखते हुए समस्या को शोध का विषय माना गया है।

समस्या का कथन

‘‘कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों में आत्मवि”वास का अध्ययन’’

शाध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्दे”य निम्न है –

1. कार्यरत महिलाओं के पुत्रों में आत्मवि”वास का अध्ययन करना ।

2. कार्यरत महिलाओं को पुत्रियों में आत्मवि"वास का अध्ययन करना।
3. अकार्यरत महिलाओं की पुत्रों में आत्मवि"वास का अध्ययन करना
4. अकार्यरत महिलाआ की पुत्रियों में आत्मवि"वास का अध्ययन करना
5. कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं के पुत्रों व पुत्रियों में आत्मवि"वास का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया –

1. कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं के पुत्रों के आत्मवि"वास में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की पुत्रियों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं होता हैं।
3. कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अंतर नहीं होता हैं ।

शोध अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध जोधपुर संभाग तक ही सीमित रखा गया हैं ।
2. प्रस्तुत शोध कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों तक ही सीमित रखा गया हैं ।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थी

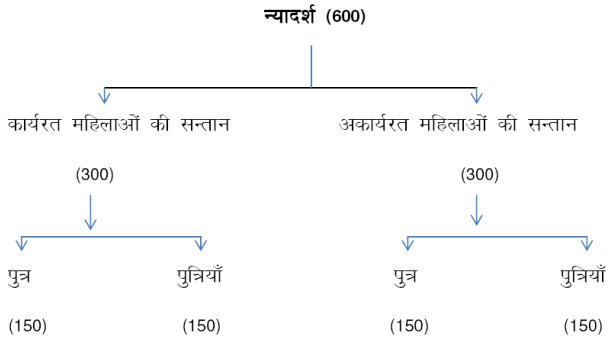

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि –

अध्ययन कार्य वर्तमान समस्या के रूप में दिखने के कारण ''सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।''

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

आत्मवि"वास हेतु ''डी.डी. पांडे द्वारा निर्मित परीक्षण SCI

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रान्तिक अनुपात (T-test)

तथ्यों का विश्लेषण एवं परिकल्पना की जाँच

सारणी संख्या – 1

कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं के पुत्रों के आत्मवि"वास का सांख्यिकीय वि"लेषण एवं व्याख्या

क्र.सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप–विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
1.	कार्यरत महिलाओं के पुत्र	150	21.53	7.42	0.76	0.05 वि"वास स्तर पर असार्थक
2.	अकार्यरत महिलाओ के पुत्र	150	22.10	6.93		

सारणी देखने से स्पष्ट होता है कि कार्यरत महिलाओं के पुत्रों के आत्मवि"वास से संबंधित मध्यमान 21.53 व प्रमाप विचलन 7.42 है तथा अकार्यरत महिलाओं के पुत्रों के आत्मवि"वास से संबंधित मध्यमान 22.10 व प्रमाप विचलन 6.93 है तथा टी मूल्य 0.76 प्राप्त हुआ जो 0.05 वि"वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम हैं। अतः अन्तर असार्थक हैं।

सारणी संख्या – 2

कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की पुत्रियों के आत्मवि"वास का सांख्यिकीय वि"लेषण एवं व्याख्या

क्र.सं.	स्मूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप–विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
1.	कार्यरत महिलाओं की पुत्रियों	150	21.17	6.64	0.64	0.05 वि"वास स्तर पर असार्थक
2.	अकार्यरत महिलाओं की पुत्रियों	150	22.00	7.28		

सारणी देखने से स्पष्ट होता है कि कार्यरत महिलाओं के पुत्रियों की आत्मवि"वास से संबंधित मध्यमान 21.17 व प्रमाप–विचलन 6.64 है तथा अकार्यरत महिलाओं की पुत्रियों के आत्मवि"वास से संबंधित मध्यमान 22.00 व प्रमाप – विचलन 7.28 है तथा टी मूल्य 0.64 प्राप्त हुआ जो 0.05 वि"वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम हैं। अतः अन्तर असार्थक हैं।

सारणी संख्या – 3

कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की संतानों के आत्मवि"वास का सांख्यिकीय वि"लेषण एवं व्याख्या

क्र.सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप–विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
1.	कार्यरत महिलाओं की संतान	300	21.35	6.98	0.59	0.05 वि"वास स्तर पर असार्थक
2.	अकार्यरत महिलाओं की संतान	300	22.05	7.05		

सारणी देखने से स्पष्ट होता है कि कार्यरत महिलाओं की संतानों के आत्मवि"वास से संबंधित मध्यमान 21.35 व प्रमाप–विचलन 6.98 है तथा अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों के आत्मवि"वास से संबंधित मध्यमान 22.05

व प्रमाप – विचलन 7.05 है तथा टी मूल्य 0.59 प्राप्त हुआ जो 0.05 वि"वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम हैं। अतः अन्तर असार्थक हैं।

शोध अध्ययन का परीक्षण

प्राप्त निष्कर्ष यह बताते है कि उपरोक्त तीनों परिकल्पनाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पनाएं स्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष

कार्यरत व अकार्यरत महिलाओं की सन्तानों के आत्मविश्वास में कोई अन्तर नहीं होता हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Books

1. Garret, Dr. Henery E. (1973), Statistics in psychology and education
2. शर्मा, डॉ. विरेन्द्र आका"ा, रिसर्च मैथोड़ोलॉजी, पंचशील प्रका"ान, जयपुर
3. अनास्तासी ए. (1952), साइकोलोजीकल टेस्टिंग, एन. वाई. मेकमिलन
4. ए.एस. रेवर्स (1987), डिक"ानरी ऑफ साइकोलॉजी, पेनपून बुक्स पब्लि"ाड बाय दा पेन्गयूइन ग्रुप,राइटस लेन, लन्दन
5. हरलॉक ई.जी. (1947), चाइल्ड डवलपमेन्ट, मैकग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क
6. कॉलमेन, जे.सी., मॉडर्न साइकोलॉजी एण्ड मार्डन लाइफ
7. मैकेण्डालेंस, बी.आर. (1961), चिल्ड्रन एण्ड एडूलेसेट बिहेवियर एण्ड डवलपमेंट, न्यूयार्क हॉल्ट एण्ड विन्सस

Thesis

1. Hock E (1980), Working and non-working mothers and their infants. A comparative study of maternal care, joining characteristics and infants social behavior
2. Abdul, Dr. Almani Sattar (2012), Study of the effects of self-confidence of working mothers on the developments of children in Pakistan
3. Marry, York (1994), Self-esteem of children in fourth through sixth grades with working and non-working mothers
4. Miscellaneous, Various websites of educational research related to self-confidence

Journals

1. ि"ाविरा पत्रिका, बीकानेर
2. Educational Herald (A quarterly journal) SGKT Collage, Jodhpur